जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 44 संख्याः 27 प्रभात बीकानेर, सोमवार 22 अगस्त, 2022 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 1.20 रू.

अमेरिका में मेरीलैण्ड और वर्जीनिया के समुद्र तट के पास एक द्वीप पर हज़ारों वर्षों से जंगली घोड़े स्वतंत्र विचरण कर रहे हैं। लेकिन ये घोड़े द्वीप पर कैसे पहुँचे यह अभी तक रहस्य बना हुआ था। अब, एक अध्ययन में कहा गया है कि, वो पुरानी लोककथा सत्य हो सकती है कि, स्पेन का एक जहाज टूटने के बाद ये घोड़े एसटीग द्वीप पर फंस गए थे। सोलहवीं सदी के एक दांत के अवशेष का डी.एन.ए. टैस्ट करके यह निष्कर्ष निकाला गया है। एक परित्यक्त करीबिअन कॉलोनी, जिसके बारे में सदियों बाद लोगों को पता चला तथा एक दांत की गलत पहचान (लंबे समय तक जिसे गाय का दांत समझा जाता रहा) ने समुद्र में एक हज़ार मील दूर स्थित इस बैरिअर आइलैण्ड (एसटीग द्वीप) का इतिहास पुनः लिखा है। फ्लोरिडा म्यूज़ियम ऑफ नैचुरल हिस्ट्री के शोध छात्र निकोलस डैल्सोल ने जब पुरा क्षेत्रों से प्राप्त गाय की हड्डियों के डी.एन.ए. का विश्लेषण किया तब मानो सभी सूत्र एक साथ जुड़ गए। डैल्सोल जानना चाहते थे कि अमेरिका में मवेशियों को कैसे पालतू बनाया गया। उन्होंने कहा, ''मैं गाय के दांत के जीवाश्म से प्राप्त मायटोकॉण्ड्रिअल डी.एन.ए. की सीक्वैन्सिंग कर रहा था, लेकिन मुझे एक स्पैसिमैन कुछ अलग लगा। वो असल में एक वयस्क मोलर का अंश था और गाय का नहीं बल्कि घोड़े का दांत था। उस दांत से जो डी.एन.ए. मिला वो अमेरिका के किसी पालतू घोड़े का ऐसा सबसे पुराना स्पैसिमैन है जिसकी सीक्वैन्सिंग की गई है। यह दांत स्पेन की पहली कॉलोनी (उपनिवेश), हिस्पैनिओला आइलैंड के पोर्तो रिअल शहर में मिला था, जो 1507 में स्थापित हुआ था तथा 1578 ईस्वी में जिसे त्याग दिया गया था। डैल्सोल ने इस दांत के डी.एन.ए. की तुलना दुनियाभर के आधुनिक घोड़ों से की। स्पैनिश लोग सदर्न यूरोप के आइबेरियन प्रायद्वीप से इन घोड़ों को लाए थे, इस तथ्य को देखते हुए डैल्सोल को उम्मीद थी कि, आइबेरियन क्षेत्र में अभी जो घोड़े हैं वो 500 साल पुराने पोर्तो रिअल स्पैसिमैन के एकदम करीबी सम्बंधी होंगे। इसके बजाय, डैलसोल को पता चला कि, इस घोड़े के निकटतम संबंधी हैं, वर्जीनिया व मेरीलैण्ड समुद्र तट के पास, हिस्पानोलिया से 1000 मील उत्तर में एस्टीग द्वीप पर सैंकड़ों साल से स्वच्छंद विचरण कर रहे घोड़े। नैशनल पार्क सर्विस, जो एसटीग आईलैण्ड के उत्तरी भाग की देखरेख करती है, के अनुसार 16 वीं सदी में अंग्रेज यहां घोड़े लाए थे। कुछ का मत है कि, ये घोड़े किसी स्पैनिश जहाज में थे जो डूब गया और घोड़े तैरकर किनारे पहुंच गए। यह बात 1947 में लिखी एक किताब में भी उल्लिखित थी, पर इसके पक्ष में ज्यादा प्रमाण नहीं मिले हैं। लेकिन डी.एन.ए. विश्लेषण से यह तो स्पष्ट है कि एसटीग के घोड़ों का स्रोत स्पेन है।

20 सितम्बर तक कांग्रेस का नया अध्यक्ष चुन लिया जायेगा

उदयपुर अधिवेशन में तय हुआ था कि, 2024 का आम चुनाव कांग्रेस नये स्थाई अध्यक्ष के नेतृत्व में ही लड़ेगी

- **कांग्रेस के अन्दर एक बड़ा धड़ा चाहता है कि, भाजपा की ओर से परिवारवाद के आरोपों का तोड़ निकालने के लिए गाँधी परिवार से बाहर का कोई व्यक्ति कांग्रेस अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभाले।**
- **सी.डब्ल्यु.सी. के एक वरिष्ठ नेता के मुताबिक इस हिसाब से राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत सबसे उपयुक्त साबित हो सकते हैं। गहलोत पहले कांग्रेस महासचिव की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं और उन्हें राहुल गाँधी का सबसे विश्वासपात्र माना जाता है।**

नई दिल्ली, 21 अगस्त (वार्ता)। कांग्रेस अध्यक्ष पद के चुनाव की प्रक्रिया एक महीने के भीतर पूरी करने के लिए नाम तय करने की कवायद रविवार से तेज हो गई है।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी (सी.डब्ल्यु.सी.) के एक नेता ने बताया कि 20 सितंबर तक नया अध्यक्ष चुन लिया जाएगा।

इस नेता ने कहा कि, उदयपुर अधिवेशन में इस बात पर सहमति बनी थी कि, इसी साल 21अगस्त से 20 सितंबर के बीच नये अध्यक्ष के निर्वाचन की प्रक्रिया पूरी कर दी जाएगी। लेकिन मुश्किल यह है कि अब तक तय नहीं है कि नया अध्यक्ष कौन होगा।

उन्होंने बताया कि पार्टी का एक बड़ा धड़ा पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी को फिर अध्यक्ष बनाना चाहता है, लेकिन गांधी ने वर्ष 2019 के आम चुनाव में पार्टी को मिली करारी हार की जिम्मेदारी लेते हुए इस पद से इस्तीफा दे दिया था और पार्टी नेताओं की ज़बरदस्त मांग के बावजूद वह दोबारा अध्यक्ष बनने में रुचि नहीं दिखा रहे हैं। अध्यक्ष पद छोड़ते समय भी उन पर इस्तीफा नहीं देने का दबाव था लेकिन गांधी ने जब अध्यक्ष पद पर बने रहना स्वीकार नहीं किया तो सोनिया गांधी को नये अध्यक्ष के चुनाव तक पार्टी का अंतरिम अध्यक्ष बनाया गया।

कांग्रेस के इस नेता का कहना है कि पार्टी का एक धड़ा चाहता है कि वर्ष 2024 में कांग्रेस की मजबूती के लिए उसे अन्तरिम नहीं बल्कि एक पूर्णकालिक अध्यक्ष चाहिए इसलिए पार्टी की सर्वोच्च नीति निर्धारक संस्था कांग्रेस कार्यसमिति में निर्णय लिया गया कि 21 अगस्त से 20 सितंबर के बीच पार्टी अध्यक्ष के नये अध्यक्ष की नियुक्ति की प्रक्रिया पूरी कर ली जाएगी।

राहुल गांधी ने लगभग साफ कर दिया है कि वह दोबारा अध्यक्ष नहीं बनेंगे। इस स्थिति में पार्टी के अंदर उहापोह का माहौल है जिससे उबरने के लिए कई नेता उत्तर प्रदेश की प्रभारी महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा को नया अध्यक्ष बनाने की मांग कर रहे हैं। पार्टी के भीतर एक धड़ा ऐसा भी है जो 2024 के आम चुनाव में परिवारवाद के विरुद्ध चल रहे भाजपा के हमले को निष्क्रिय करने के लिए गांधी परिवार से बाहर के व्यक्ति को कांग्रेस का नया अध्यक्ष बनाने को बड़ा राजनीतिक दांव मान रहा है।

कांग्रेस के अंदर हलचल है कि यदि गांधी परिवार से बाहर के व्यक्ति आम चुनाव के मद्देनजर अध्यक्ष बनाना है तो इसमें रणनीति के लिहाज से सबसे उपयुक्त राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत साबित हो सकते हैं ,हालांकि गहलोत पहले कह चुके हैं कि वह अध्यक्ष पद के दावेदार नहीं है।

गहलोत मुख्यमंत्री बनने से पहले पार्टी में महासचिव संगठन के पद का उत्तर दायित्व निभा चुके हैं और उन्हें पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी का विश्वासपात्र माना जाता है।

कांग्रेस के एक अन्य नेता का कहना है कि पार्टी का एक और धड़ा है जो दलित, आदिवासी और पिछड़ा वर्ग के वोटों को साधने के लिए दलित नेता मुकुल वासनिक, सुशील कुमार शिंदे, कुमारी सैलजा तथा मलिकार्जुन खडगे जैसे नेताओं में से किसी को अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी सौंपने के पक्ष में है। उनका कहना है कि इस दौड़ में मुकुल वासनिक सबसे आगे होते लेकिन कांग्रेस के असंतुष्ट गुट समूह 23 के नेताओं ने पिछली बार उनका नाम आगे किया था इसलिए वह पार्टी नेतृत्व की पसंद और विश्वासपात्र नहीं हो सकते। इस क्रम में राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे पार्टी के पूर्व अध्यक्ष के बहुत करीबी और अत्यंत विश्वासपात्र माने जाते है।

कर्नाटक विधानसभा के चुनाव भी होने हैं इस क्रम में उनकी महत्ता को देखते हुए उन्हें अध्यक्ष बनाने की कवायद चल सकती है।

आनंद शर्मा ने हिमाचल कांग्रेस संचालन समिति के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दिया

आनंद शर्मा ने सोनिया गाँधी को लिखे पत्र में कहा है कि, वे अपने स्वाभिमान के साथ समझौता नहीं कर सकते

- **आनंद शर्मा के इस कदम को कांग्रेस पार्टी के लिए बड़ा झटका माना जा रहा है।**
- **आनंद शर्मा से पहले गुलामनबी आज़ाद भी कश्मीर कांग्रेस की चुनाव समिति के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे चुके हैं।**
- **भूपेन्द्र सिंह हुड्डा और मनीष तिवारी सहित कई अन्य दिग्गज नेताओं वाला यह जी-23 समूह कांग्रेस वर्किंग कमेटी (सी.डब्ल्यु.सी.) के चुनाव संवैधानिक तरीके से कराये जाने पर जोर दे रहा है।**

नई दिल्ली, 21 अगस्त। हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस के वरिष्ठ नेता आनंद शर्मा ने पार्टी की राज्य की संचालन समिति के अध्यक्ष पद से रविवार को इस्तीफा दे दिया। उनके इस कदम को कांग्रेस के लिए बड़े झटके के तौर पर देखा जा रहा है। सूत्रों के मुताबिक, समझा जा रहा है कि शर्मा ने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी को लिखे पत्र में कहा है कि उनके स्वाभिमान के साथ 'समझौता नहीं किया जा सकता' और उन्होंने पार्टी की हिमाचल इकाई की संचालन समिति के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया है।

वरिष्ठ नेता आनंद शर्मा से पहले जी-23 समूह के एक अन्य नेता गुलाम नबी आजाद जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस की चुनाव अभियान समिति के अध्यक्ष के पद से इस्तीफा दे चुके हैं। शर्मा ने कांग्रेस अध्यक्ष से कहा है कि परामर्श प्रक्रिया में उनकी अनदेखी की गई है। हालांकि, उन्होंने भरोसा दिलाया है कि वह राज्य में पार्टी उम्मीदवारों के लिए प्रचार करना जारी रखेंगे। पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं राज्यसभा में कांग्रेस के उपनेता शर्मा को 26 अप्रैल को हिमाचल प्रदेश में पार्टी की संचालन समिति के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था।

आजाद और शर्मा, दोनों ही जी23 समूह के प्रमुख नेता हैं, जो पार्टी नेतृत्व के फैसलों की आलोचना करने से नहीं चूके हैं।

भूपेंद्र सिंह हुड्डा और मनीष तिवारी सहित कई अन्य दिग्गज नेताओं वाला यह समूह ब्लॉक से लेकर केंद्रीय कार्य समिति स्तर तक सही तरीके से चुनाव कराने पर जोर दे रहा है। हिमाचल प्रदेश के सबसे वरिष्ठ नेताओं में शुमार शर्मा ने कांग्रेस अध्यक्ष को भेजे अपने पत्र में कथित तौर पर कहा है कि उनके स्वाभिमान को ठेस पहुंची है, क्योंकि उनसे पार्टी की किसी भी बैठक के लिए परामर्श नहीं किया गया और न ही उन्हें उनमें आमंत्रित किया गया। शर्मा ने पहली बार 1982 में विधानसभा चुनाव लड़ा था।

1984 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने उन्हें राज्यसभा भेजा था। वह तभी से राज्यसभा सदस्य हैं और पार्टी में कई प्रमुख पदों पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

मु.मंत्री की बेटी ने डॉक्टर को थप्पड़ मारा

आइजवाल, 21 अगस्त। मिजोरम के मुख्यमंत्री जोरमथंगा की बेटी का वीडियो वायरल होने के बाद सी.एम. ने सार्वजनिक रूप से माफी मांगी है। उन्होंने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर कहा कि वह अपनी बेटी

- **मिजोरम के मु.मंत्री की बेटी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है जिसमें वे एक चर्म रोग विशेषज्ञ को थप्पड़ मार रही हैं। इस घटना के बाद डॉक्टरों ने भारी रोष जताया है।**

के इस व्यवहार को किसी भी तरह उचित नहीं ठहरा सकते। सी.एम. ने कहा, बेटी ने डॉक्टर के पास जाकर उनसे माफी मांगी है। मुख्यमंत्री की बेटी मिलारी छांगते का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया था जिसमें वह एक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राष्ट्रपति पुतिन का ''ब्रेन'' कहे जाने वाले अलैक्जेंडर दुगिन की बेटी की हत्या

अलैक्जेंडर दुगिन को यूक्रेन-रूस युद्ध का मास्टरमाइण्ड माना जाता है

- **मॉस्को शहर के बाहर अलैक्जेंडर दुगिन की बेटी मारिया दुगिन की कार को एक बम विस्फोट में उड़ा दिया गया।**
- **कहा जा रहा है कि, अलैक्जेंडर दुगिन भी उनकी बेटी की कार में ही सवार होने वाले थे, लेकिन किन्हीं कारणों से वे दूसरी कार में अपनी बेटी को फॉलो कर रहे थे।**

मॉस्को, 21 अगस्त। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन का ब्रेन यानी दिमाग कहे जाने वाले एलेक्जेंडर दुगिन की बेटी दारिया की कार धमाके में हत्या हो गई है। खबर है कि हादसा राजधानी मॉस्को के बाहर शनिवार रात को हुआ। माना जा रहा है कि यह विस्फोट एलेक्जेंडर के लिए लगाया गया था, जिसका शिकार उनकी बेटी हो गई हैं।

खबर है कि दारिया की कार में मॉस्को क्षेत्र के ओदिनसोस्की डिस्ट्रिक्ट में आग लग गई थी। एलेक्जेंडर रूसी फिलॉस्फर और राजनीतिक विश्लेषक हैं। वह भी घटनास्थल पर पहंच गए थे। मीडिया में जारी वीडियोज में नजर आ रहा है कि हादसे को देखकर वह स्तब्ध रह गए थे। खास बात है कि दुगिन पर साल यूरोपियन यूनियन, अमेरिका और कनाडा प्रतिबंध लगा चुके हैं।

पुतिन का दिमाग माने जाने वाले एलेक्जेंडर की यूक्रेन के साथ युद्ध में भी बड़ी भी भूमिका रही है। वह ही क्रीमिया और और यूक्रेन के खिलाफ हुई सैन्य कार्रवाई के पीछे उनका हाथ था।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, 30 वर्षीय दारिया एक कार्यक्रम से घर लौट रही थी। रास्ते में उनकी कार टोयोटा लैंड क्रूजर हादसे का शिकार हो गई। कहा जा रहा है कि इस कार में एलेक्जेंडर सवार होने वाले थे, लेकिन अंतिम समय में उन्होंने फैसला बदल लिया था। खबर है कि वह अपने बेटी के पीछे ही आ रहे थे और उन्होंने हादसा होते हुए देखा है।

रूस की जांच समिति ने रविवार को कहा कि जांचकर्ताओं का मानना है कि रूसी राजनीतिक दार्शनिक और विश्लेषक अलेक्जेंडर दुगिन की बेटी डारिया दुगिना की एक घातक कार दुर्घटना में मौत की घटना पूर्वनियोजित थी।

जांच समिति की ओर से जारी बयान के मुताबिक पहले से प्रारंभिक जानकारी के आधार पर जांचकर्ताओं का मानना है कि अपराध की योजना पहले और विशेष रूप से बनाई गई थी।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अभिनेता रणवीर सिंह

यह सच है, अगर ''टैलिकॉम रैव्योल्यूशन'' नहीं होता, तो भारत आई.टी. में वहाँ नहीं पहुँचता, जहाँ है... (2)

पर राजीव गाँधी इससे ज्यादा इसलिए याद किए जायेंगे कि, वे एक ''डीसैन्ट'' राजनीतिज्ञ थे और अंत तक रहे

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 21 अगस्त। राजीव गांधी ने कम्प्यूटर्स के महत्व को अनुभव कर लिया था और उन्होंने इसके उपकरणों के आयात को सस्ता कर दिया। देश को नई दिशा की ओर ले जाने में कम्प्यूटर हार्डवेयर महत्वपूर्ण और अनिवार्य था।

यह सब 80 के दशक के मध्य के राजीव गांधी के सपनों में शुमार थे।

आयातों सहित आर्थिक सुधारों ने निश्चित रूप से अगले दशक की शुरूआत में उभरने वाले संकट में अपना योगदान दिया। 1990 के दशक की शुरूआत में विदेशी भुगतानों के संकट से दो-चार होना पड़ा।

लेकिन यह संकट एक अप्रत्यक्ष कृपादान साबित हुआ। एक गहरे और ऊर्जावान संकट के बिना भारत नियमों और प्रतिबंधों के भारी मार से कभी छुटकारा नहीं पा सकता था तथा इस संकट ने भारतीय अर्थव्यवस्था को एक सांचे में ढाल दिया।

अर्थव्यवस्था इस सांचे से बाहर नहीं निकल सकी और रेंगने लगी।

नरसिम्हाराव ने प्रधानमंत्री बने, बाद में अपने वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के सहयोग से दमघोटू प्रतिबंधों का जाल हटा दिया पर निश्चित रूप से इसकी शुरूआत राजीव गांधी ने की थी।

राजीव गांधी ने भारतीय राजनीति में शिष्टता और गरिमा का नया अंदाज लाए थे।

वे बेहद भद्र और शिष्ट इसांन थे। मुझे कई बार सौभाग्य मिला राजीव गांधी के "आउटटीच" कार्यक्रम का हिस्सा बनने का, जिसकी शुरूआत उन्होंने तब की थी जब वे सत्ता से बाहर हो गए थे। तब वे दस जनपथ की लायब्रेरी में पत्रकारों से मिला करते थे वहां अनौपचारिक व खुली चर्चाएं होती थी। ऐसे माहौल में राजीव गांधी कई अलग तरह के मुद्दे भी रख सकते थे।

- **उन्हें जब मालूम पड़ा कि, अटल बिहारी वाजपेयी ''किडनी'' पेशैन्ट हैं, तथा इस गंभीर बीमारी के इलाज के लिए अमेरिका नहीं जा पा रहे, तो, राजीव ने उन्हें संसद में अपने प्रधानमंत्री कार्यालय में बुलाया और यू.एन. जनरल असैम्बली की बैठक में जा रहे भारत के ''ऑफीशिअल डैलिगेशन'' का सदस्य बनाया और उनका न्यूयॉर्क जाना संभव किया। वाजपेयी सैशन खत्म होने के बाद भी रूके और उनका पूरा इलाज हुआ। वाजपेयी के जीवन में कुछ और साल जुड़े तथा भाजपा का प्रथम प्रधानमंत्री बनना संभव हुआ।**

उन्हें ऐसे ऑफबीट मुद्दों पर चर्चा करना पसंद होता था, जिनकी वृहद स्तर पर प्रभाव पड़ता था। मुझे याद है वे सोच रहे थे कि टी.वी. क्रांति से किस प्रकार समाज और राजनीति प्रभावित होगी। आप भारतीयों को दूसरे देशों के समाचार, समकालीन मुद्दों से संबंधित कार्यक्रम या सोप ओपेरा देखने से नहीं रोक सकते हैं।

उनको लगता था इसका हल यह है कि भारतीय टी.वी. कंपनियों को बढ़ावा दिया जाए जो विदेशी कंपनियों को टक्कर दे सके। इसका नतीजा यह था कि भारतीय टी.वी. दूरदर्शन के शिकंजे से मुक्त हो गया और चैनलों की प्रतिस्पर्धा के लिए खुल गया।

लेकिन आज राजीव गांधी की उन स्मृतियों को अनदेखा नहीं किया जा सकता, जो कांग्रेस प्रवक्ता जयराम रमेश पुराने रिकॉड से निकालकर लाए हैं।

रमेश ने एक रीट्वीट किया जिसमें अटल बिहारी वाजपेयी बता रहे थे कि किस प्रकार भारत के प्रधानमंत्री ने एक विपक्षी नेता ''अटल बिहारी वाजपेयी'' की औपचारिक रास्तो से अलग जाकर मदद की और अमेरिका में उनका इलाज करवाया। वाजपेयी खुद यह सब करवाने में असमर्थ थे।

वाजपेयी को किडनी की समस्या हो गई थी। राजीव गांधी को इसकी जानकारी मिली। तब एक भारतीय प्रतिनिधिमंडल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

रिश्वत केस में सेना के दो अधिकारी गिरफ्तार

नई दिल्ली, 21 अगस्त (वार्ता)। सैन्ट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वैस्टिगेशन (सी.बी.आई.) ने रविवार को कहा कि, रिश्वतखोरी के कथित मामले में सेना के दो अधिकारियों सहित चार लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

सी.बी.आई. सूत्रों ने अपने एक बयान में कहा कि आरोपियों की पहचान

- **सैन्य अधिकारियों पर आरोप है कि, उन्होंने अम्बाला कैन्ट की सभी निविदायें एक खास कंपनी को देने के लिए लाखों रू. की रिश्वत ली।**

एम.ई.एस. अंबाला केंट में तैनात लेफ्टिनेंट कर्नल राहुल पवार, वरिष्ठ बैरक स्टोर अधिकारी और सूबेदार मेजर प्रदीप कुमार तथा ठेकेदार दिनेश कुमार और प्रीतपाल के रूप में की गई है। कथित रूप से रिश्वत मांगने के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)